कविताओं का प्रतिपाद्य

1. **गीत गाने दो मुझे** कविता में निराला ने ऐसे समय की ओर इशारा किया है जिसमें चोट खाते–खाते, संघर्ष करते–करते होश वालों के होश खो गए हैं यानी जीवन जीना आसान नहीं रह गया है। जो कुछ मूल्यवान था वह लुट रहा है। पूरा संसार हार मानकर जहर से भर गया है। पूरी मानवता हा–हाकार कर रही है लगता है मानो पृथ्वी की लौ बुझ गई है, मनुष्य में जिजीविषा खत्म हो गई है। इसी लौ को जगाने की बात कवि कर रहा है और वेदना–पीड़ा को छिपाने के लिए, उसे रोकने के लिए गीत गाना चाहता है। निराशा में आशा का संचार करना चाहता है।

2. **सरोज स्मृति** कविता निराला की दिवंगता पुत्री सरोज पर केंद्रित है। यह कविता नौजवान बेटी के दिवंगत होने पर पिता का विलाप है। पिता के इस विलाप में कवि को कभी शकुंतला की याद आती है कभी अपनी स्वर्गीय पत्नी की। बेटी के रूप रंग में पत्नी का रूप रंग दिखाई पड़ता है, जिसका चित्रण निराला ने किया है। यही नहीं इस कविता में एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके संबंध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अकर्मण्यता बोध भी प्रकट हुआ है। इस कविता के माध्यम से निराला का जीवन संघर्ष भी प्रकट हुआ है। तभी तो वह कहते हैं – दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही।

Scanned with CamScanner

काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या

गीत गाने दो मुझे

गीत गाने दो मुझे तो,
वेदना को रोकने को।
    चोट खाकर राह चलते
    होश के भी होश छूटे,
    हाथ जो पाथेय थे, ठग–

Scanned with CamScanner

ठाकुरों ने रातें लूटे,
कंठ रूकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो।
भर गया है जहर से
संसार जैसे हार खाकर,
देखते हैं लोग लोगों को
सही परिचय न पाकर,
बुझ गई है लौ पृथा की,
जल उठो फिर सींचने को।

प्रसंग :– प्रस्तुत कविता **सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** द्वारा रचित है। इस कविता में कवि ने ऐसे समय की ओर इशारा किया है जिसमें चोट खाते–खाते, संघर्ष करते–करते होश वालों के भी होश खो गए हैं अर्थात अब जीवन जीना आसान नहीं रह गया है। जो कुछ मूल्यवान था, वह लुट रहा है। पूरी मानवता हा–हाकार कर रही है।

व्याख्या :– कवि अपने मन में समाई वेदना–पीड़ा को छिपाए रखने के लिए गीत गाना चाहता है। वह निराशा में आशा का संचार करना चाहता है। कवि कहता है कि मुझे गीत गाने दो ताकि मैं मन की पीड़ा को रोक सकूँ।

इस जीवन–मार्ग पर चलते हुए इतनी चोटें खाई हैं कि होश वालों के भी होश खो गए हैं अर्थात अब उनके लिए जीवन आसान नहीं रह गया है। हाथ, जो हमारे थे, उन्हें ठगों और मालिकों ने लूट लिया अर्थात हमारी श्रमशक्ति का भरपूर लाभ पूँजीपतियों (शोषकों) ने उठाया है। जो कुछ भी मूल्यवान था, वह सब लुट रहा है। अब तो गला (कंठ) भी रुकता चला जा रहा है अर्थात बोलने की शक्ति भी चुक रही है। मौत निरंतर बढ़ती चली आ रही है। सब मिटता–सा लगता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पूरा संसार हार मानकर जहर से भर गया है। पूरी मानवता हा–हाकार कर रही है। लोग दूसरों को अपना सही परिचय तक नहीं देते। इससे लगता है कि पृथ्वी की लौ ही बुझ गई है अर्थात लोगों में जिजीविषा (जीने की इच्छा) ही खत्म हो गई है।

कवि इसी लौ (जिजीविषा) को जगाने का आह्वान करता है। वह मन की वेदना–पीड़ा को छिपाने के लिए, उसे रोकने के लिए गीत गाना चाहता है। इस प्रकार वह निराशा के मध्य आशा का संचार करना चाहता है।

Scanned with CamScanner

नव्य आशा का संचार करना चाहता है।

विशेष : 1. कवि वर्तमान निराशा के वातावरण में आशा की लौ जगाना चाह रहा है

2. यह कविता प्रगतिवादी दौर की रचना है।

3. 'ठग–ठाकुर' तथा ठग ठाकुर में प्रतीकात्मकता का समावेश है। ये शब्द शोषकवर्ग के लिए हैं।

4. 'गीत गाने' तथा ठगठाकुर में **अनुप्रास अलंकार** का प्रयोग है।

5. खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

Scanned with CamScanner

4. मुझ भाग्यहीन की तू संबल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!
हो इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म, रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शीत के–से शतदल!
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण!

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता **'सरोज–स्मृति'** से अवतरित हैं। कवि स्वयं को भाग्यहीन इसलिए मानता है क्योंकि वह पुत्री के लिए कुछ न कर पाया। उसे अपनी अकर्मण्यता का बोध सालता है।

व्याख्या :– कवि कहता है कि मैं तो भाग्यहीन हूँ और तू मेरा सहारा थी। आज बहुत समय बाद तेरी स्मृति मुझे विकल (बेचैन) कर रही है। मेरे जीवन में तो दुख–ही–दुख रहा। मेरा जीवन दुख की एक लंबी कथा बनकर रह गया। आज भला मैं उसके बारे में क्या कहूँ, जिसे मैंने आज तक नहीं कहा। मेरे इसी कर्म पर भारी विपत्ति पड़े। मेरा माथा सदा झुका रहेगा क्योंकि मैं पुत्री के प्रति अपने धर्म का पालन नहीं कर सका।

कवि स्वयं को धिक्कारता हुआ कहता है कि जीवन–पथ पर चलते हुए मेरे जितने भी काम हैं वे सब ऐसे ही भ्रष्ट (नष्ट) हो जाएँ जैसे शीतकाल में कमल हो जाता है। हे पुत्री! मैं अपने विगत कर्मों को तुझे अर्पित करके, तेरा तर्पण करता हूँ अर्थात कवि अपने सभी कर्मों का फल पुत्री को भेंट चढ़ाकर अपने मन के बोझ को हल्का करना चाहता है तथा उसको श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Scanned with CamScanner